प्रातःक्लास 4.4.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। समझाते–2 पारस बुद्धि बनाते हैं। यह भी समझ की बात है ना। यह (ल.ना.) भी पारस बुद्धि तुम्हारे सामने बैठे हैं ना। तुम जानते हो हम यह थे अथवा इनके कुल के अथवा राजधानी के थे। यहां जब आते हो तो निश्चय रहता है। अपने गांव में रहते हो तो इतना नशा नहीं रहता है। बाप समझाते हैं तुमको याद है या भूल गये हो? जिसने यह पद प्राप्त कराया उनका नाम भी बहुत रख दिये हैं। बाबा भी कहते हैं, सलोना माशुक भी कहते हैं। आधा कल्प तुम उनको याद करते आये हो। बाप आकर उस आधा कल्प के याद को मिटाते हैं। सामने आकर खड़े होते हैं। बच्चे भी यह जानते हैं ज्ञान सागर हमको पढ़ाते हैं। कोई देहधारी नहीं है। आत्मा सुनती है, परमात्मा सुनाते हैं। आ(ि)त्मक बुद्धि होकर ही सुनना है। यह है ही रूहानी नॉलेज। एक ही बार यह रूहानी नॉलेज मिलती है। कितनी अच्छी नॉलेज है। सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानते हो। बाप की जो इतनी महिमा गाते हैं तो ज़रूर आकर बच्चों को सिखाया होगा ना। तब तो महिमा करते हैं। तुम जानते हो बाबा सामने बैठा है। हम अपना घर–बा(र) छोड़ कर बाबा से मिलने आये हैं। बाबा से फिर से दैवी स्वराज्य का वर्सा लेने आये हैं। रजिस्टर भी तुम भरते हो तो उसमें भी लिखना चाहिए बेहद के बाप से बेहद की बादशाही का फिर(से) वर्सा पाने रिफ्रेश होने लिए आये हैं। इसको (लिखने) में भी समझ चाहिए। देखना चाहिए क्या–2 लिखते हैं। लिखत ऐसी हो जो कोई भी आये, रजिस्टर देखे तो समझे कि यह बेहद के बाप के बच्चे हैं। बेहद के बाप से वर्सा लेने लिए आये, रिफ्रेश हो चले जाते हैं। लिखने से ही समझ जाये बरोबर इ(न्)हों को पढ़ाने वाला बेहद का रूहानी बाप है। यह भी तुम बच्चे समझते हो। सारे कल्प में बाबा एक ही बार आते हैं। यह जिनकी बुद्धि बेहद में रहती है सिमरण करते हैं उनको खुशी भी होगी। कईयों को तो माया एकदम भुला देती है। यहां से घर में गये, मित्र–सम्बन्धी आदि देखे तो बस वह नशा उड़ जाता है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई तो इसी धंधे में ही लग जाते हैं; इसलिए यह मधुबन गाया हुआ है। तुम बच्चों ने समझा है मधुबन किसको कहा जाता है। क्या है? फ़र्क तो बहुत (है) ना। यहां तुम प्रैक्टिकल में बाप के आगे बैठे हो। नम्बरवार खुशी भी रहती है। बाप मिला बस। दूसरी तो को(ई) चीज़ मीठी नहीं। बाप कितना सुख के साधन बताते हैं। (ऐ)से बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। यह कोई अपनी बड़ाई नहीं करते हैं। बाप समझाते हैं मुझे याद करो। वह तो देहधारी नहीं हैं। वह है ही विदेही। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। बाबा कहते हैं मैं इस तन द्वारा तुमको पढ़ाने आया (हूं)। यह रथ है ना। जैसे तुम्हारा अपना–2 रथ है, उनका तो अपना रथ नहीं है। वह है शिव, तुम शालीग्राम। बाप और बच्चे। उनकी (ही) महिमा है। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को भी जानते हैं। कहते हैं मैं इस तन द्वारा सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाता हूं। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई पढ़ा न सके। टीचर को तो कब भूलना न चाहिए। सर्विस करने लिए बाप समझाते हैं। बाप का परिचय देना है। बाप ही पतित–पावन है। आत्माओं और परमात्मा का मेला बड़ा भारी है। जबकि परमात्मा आकर बच्चों को पढ़ाते हैं। वह भक्तिमार्ग की तो बात ही अलग है। वहां तो मेले लगते ही आते हैं। यह मेला तो एक ही बार का है। फिर यह मेला 5000 वर्ष के बाद ही (लगेगा)। भक्तिमार्ग में तो बहुत झंझट हैं। कितना माथा मारना रोना–पीटना होता है। कितने गीत गाते हैं (रिझाने) के लिए। कृष्ण को रिझाये शंकर को रिझावेंगे। शंकर को रिझाये हनुमान को रिझावेंगे। यहां तो किसको रिझाने की बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। टीचर के डायरैक्शन पर चलना है। न चलेंगे तो ज़रूर नापास हो जावेंगे। यह तो कॉमन बात है। वह है हद की स्कूल। यह है बेहद का। पढ़ते भी तुम कैसे साधारण रीति हो। नीचे पट में बैठकर पढ़ते हो। म्यूज़ियम मे जाते हैं, ऐसे नहीं जूता उतार कर जाते हैं, नहीं। यह तो पढ़ाई है, भल जूता पड़ा रहे। भक्तिमार्ग में तो देवताओं के आगे जूता पहन कर नहीं जाते हैं। यह तो पढ़ाई है। पढ़ाई में जूता नहीं उतारा जाता। जूता भक्तिमार्ग में उतारा जाता है म्यूज़ियम

में जावे, जूता बाहर उतार कर जावे तो चोरी हो जाये। तो यह पढ़ाई कैसी वण्डरफुल है। बाप बच्चे–2 कह समझाते रहते हैं। ऐसी टेव पड़ी हुई है। सभी को बच्चा–2 कहते रहेंगे। यह टेव रहने से कब–2 मैं भी बाबा बन जाता हूँ। यह हमारे बच्चे हैं। अपन को भाई नहीं समझता हूँ। वह आदत निकलती जाती है। बच्चा–2 ही कहता है। तो बाप बन गया ना। फिर भी सम्बन्ध नहीं रहता। इस दुनियां से कोई सम्बन्ध नहीं है इनका। मैं तो वहां का रहने वाला हूँ। आता हूँ पढ़ाने लिए। मैं–मैं करते मैं ही हो जाता हूँ। पढ़ाने की भी खुशी होती है। रहम भी आता है। समझाता हूँ मीठे बच्चों, औरों का कल्याण करो। सिर्फ़ मंत्र देते रहो। गुरू लोग मंत्र देते हैं घर में बिठा थोड़े ही देते हैं। इतने लाखों फॉलावर्स होते हैं, सभी उनके घर में रहते हैं क्या? मंत्र लेकर अपने घर में चले जाते हैं। वह सभी है भक्ति। ज्ञान से तो सद्गति हो जाती है। भक्ति भी आधा कल्प चलती है। अभी तुम जान गये हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी तो तुमको भक्ति का नाम भी नहीं सुनना होता है। बाप कहते हैं यह झूठी बाह्यात बातें अभी तुम न सुनो। भक्ति मार्ग घोर–अंधियारा मार्ग है धक्का खाने का। सतयुग में धक्के खाने की बात ही नहीं; इसलिए भक्त लोग भगवान को याद करते हैं। बाबा, हमको भक्ति का फल दो। भक्ति का फल है ज्ञान। ज्ञान का फल है विश्व की बादशाही। फिर यह रावण राज्य ही खलास हो जाता है। इतने समय हम रावण राज्य में थे; इसलिए हर वर्ष रावण को जलाते आते हैं। सतयुग में तो रावण होगा ही नहीं। भस्मासुरी, अकासुर, बकासुर, यह सभी नाम आसुरी सम्प्रदाय के हैं। वहां यह नाम होते ही नहीं। बच्चों ने अभी ज्ञान और भक्ति को समझ लिया है। भक्ति अभी खलास होती है। उनमें कोई सुख नहीं। अल्पकाल का सुख है। कृष्ण को देखा बस। कृष्ण की(ही) कृष्ण करते रहते हैं। बहुत प्यार से याद करते हैं। होता कुछ भी नहीं है। जब तक बाप आकर समझावें। बाप कहते हैं तुम पापात्मा हो, फिर कृष्ण को याद करने से फायदा क्या? पहले पुण्यात्मा तो बनो। तब ही कृष्ण जैसे बन सकते हो। सबसे फर्स्ट क्लास है शिवबाबा की अव्यभिचारी भक्ति। अभी तुमको मिलता है अव्यभिचारी ज्ञान। एक से ज्ञान लिया जाता है। बाप समझाते हैं यह वही गीता है। तुम लिखते भी हो। बाप जब आकर गीता सुनाते हैं तो हम स्वर्ग़वासी बन जाते हैं। मनुष्यों द्वारा गीता सुनते–2 हम नर्कवासी बन गये हैं। इसमें डरने की तो बात ही नहीं। मुख से तुम समझाते हो। गीता से ही राजयोग सिखाया जाता है। तुम राजाओं का राजा बन जाते हो। फिर जिन्होंने तुमको सुख दिया उनको भक्ति मार्ग में तुम याद करते हो। अभी तुमको समझ पड़ गई है। बाप ने राजयोग सिखाया हम ही देवी–देवता बने। जिनकी महिमा शुरू से चली आती है। पहले होती है शिव की पूजा। फिर देवताओं की। पूजा भी नम्बरवार होगी ना। यह ड्रामा बहुत अच्छा बना हुआ है। यह ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग समझाया जाता है। ग्लानी नहीं की जाती है। यह तो अनादि ड्रामा है। जिसमें भगवान का पार्ट है। इसको ऐसे थोड़े ही कहेंगे ड्रामा ठीक नहीं है। यह तो कब हंसी करते हैं। कैसा ड्रामा बना हुआ है। ऐसे–2 क्या पढ़ेंगे; परन्तु ड्रामा तो अनादि अविनाशी है ना। भगवान हमको पढ़ाते हैं, अन्दर में कितनी खुशी होती है। मुर्दे जैसी सिकल थोड़े ही होनी चाहिए। कई मुर्दे भी बन पड़ते हैं। फारकती दे देते हैं। सिकल ही मुरझाई हुई रहती है। वह क्या देवता बनेंगे? प्रजा, दास–दासियां आदि बन सकते हैं। वह भी आगे चलकर तुम सब देखेंगे। जैसे राजा होता है वह कब ऐसे चर्ये–खर्ये की सिकल नहीं देखेंगे। तुम्हारे में भी वह हालत हो जावेगी। फोर्थ क्लास को कब देखेंगे नहीं। यहां भी ऐसे तुम देखेंगे। फिर भी स्वर्ग़ की दासी बनना कोई कम नहीं है। यहां बाप तो आये हैं तुमको पढ़ाने। थोड़ा भी कोई पढ़ते हैं तो स्वर्ग़वासी होते हैं। जो भी भारतवासी हैं उनको स्वर्ग तो याद रहता ही है। कोई मरता है तो भी कहेंगे स्वर्ग़वासी हुआ। उन्हों को भी स्वर्ग़ और नर्क का फ़र्क समझाना चाहिए; इसलिए बाबा ने पर्चे भी छपवाई है। है ही नर्क तो ज़रूर पुनर्जन्म नर्क में ही लेंगे ना। ऐसे थोड़े ही पुनर्जन्म स्वर्ग़ में होगा। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग

पर। इनकी बड़ी महिमा है। अभी तुम जानते हो हम न नर्क में, न स्वर्ग में हैं। दोनों से ही ऊँच हैं। ब्राह्मणों के लिए चोटी दिखाते हैं ना। इस समय बड़ा अच्छा है जबकि हम बाप से पढ़ते हैं। बाप से हम पढ़ते ही रहें। फिर थोड़े ही ऐसा बाप पढ़ावेंगे। बेहद का बाप हमारा बाप है। टीचर भी है सतगुरू भी है। ऐसा बाप तो कब मिलेगा नहीं। जिनका बाप के साथ लव होगा कहेंगे हम तो यहां ही रहें। स्वर्ग नहीं चाहिए। हमको तो बाबा चाहिए। यह बाबा भी उस बाबा की महिमा करते हैं। शिवबाबा जैसा ऊँच ते ऊँच रहम दिल कोई होता नहीं। ऐसे बाप के साथ क्यों न रहें। यही वण्डरफुल अवस्था है, जिसमें तुम हीरे जैसा बनते हो। ऐसी अवस्था स्वर्ग में भी नहीं होती है। अभी तुम ईश्वरीय संतान हो फिर दैवी सन्तान बन जावेंगे। अभी तुम चढ़ते हो। तुम ब्राह्मण कितने थोड़े हो। दुनियां में कितने ढेर मनुष्य हैं। भारतवासियों से भी क्रिश्चियन्स जास्ती हो गये हैं। क्रिश्चियन, मुसलमान आदि कितने ढेर हैं। तुम जानते हो हम पढ़कर फिर राजाई करने तैयार हो जावेंगे। इसको गुप्त नशा कहा जाता है। बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे आधा कल्प के पाप भस्म हो जावेंगे। रावण में तुमने पाप ही किये हैं। पहला पाप तो है विकार का। बाप की याद से ही इन पर जीत पाने की ताकत मिलती है। यह याद ही भूल जाते हैं। घड़ी–2 भल गीता तो पढ़ते हैं; परन्तु भगवानुवाच किसको कहा जाता है पता नहीं। तो जट ठहरे ना। पहले तुमको भी यह खयाल थोड़े ही आता था। भगवान ने तो राजयोग सिखाये डबल सिरताज बनाया। सन्यासी भल गीता आदि सुनाते हैं; परन्तु वह डबल सिरताज तो बनते ही नहीं। अभी तुमको स्मृति दिलाई जाती है । तुम्हारे लिए यह कोई नई बात नहीं है। बाप ही पूछते हैं आगे कब मिले हो? ऐसे कोई और पूछ न सके। आवेगा ही नहीं। बच्चियां कहती हैं बाबा हम 500(0) वर्ष पहले मिले थे। क्या लिया था? स्वर्ग का वर्सा; परन्तु स्वर्ग के वर्से में भी पद बहुत हैं। राजा–रानी भी स्वर्ग के मालिक कहेंगे तो प्रजा नौकर–चाकर भी स्वर्ग के मालिक तो समझेंगे ना। पद तो नम्बरवार ही है। यह है तो सत्यनारायण की कथा; परन्तु प्रजा दास–दासियां आदि भी तो हैं ना। माला बनती है। फिर आधा कल्प बाद पवित्र राजाई रहती नहीं। तुम इस पढ़ाई का 21 जन्म फल भोगते हो। फिर रावण राज्य शुरू होता है। तो फल समाप्त। भक्ति शुरू हो जाती है। आगे चल कर जिन्होंने ग़फ़लत में आकर शादी आदि की है वे सब आते रहेंगे। जो अभी मारते हैं उन्हों से ही खुशी से छुट्टी लेकर आवेंगे ज़रूर। आते भी रहते हैं। इसमें भी बल चाहिए। जितना याद में तुम रहेंगे उतना ही बलवान बनेंगे। उनको कशिश होगी। साधु (लो)ग भी खींचते हैं ना। वह है भक्ति का बल, जो कशिश करता है। भक्ति में कितना म(स)त रहते हैं। भक्ति में (ब)ल है अल्पकाल सुख मिलने का। ज्ञान में बल है 21 जन्म सुख भोगने का। अभी यह पुरानी दुनियां ही (ख़)त्म होनी है। यह है तुम्हारी एमऑब्जेक्ट। भारतवासियों को ऐसी राजधानी हम दिलाते हैं। इन देवी–देवताओं की राजधानी स्थापन हो रही है। यह भी तुम जानते हो आत्मा अविनाशी है। देह विनाशी है। आत्मा 84 जन्मों का पार्ट (बजाती) है। बाप कहते हैं तुम पापात्मा बने हो। फिर अभी पावन बनना है। मैं हूं (प)तित–पावन। मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह राजयोग है। बाकी तुम जो कुछ सीखते (हो) वह है भक्ति। अभी बेहद के बाप से आकर वर्सा लो। अभी ही सभी आ जाये तो रिवोल्युशन हो जाये। ...सब पीछे आवेंगे। अभी नहीं। इस समय है रावण राज्य की पॉम्प। बहुत धनवान हो गये हैं। रावण राज्य (में) भी धन का नशा चाहिए ना। कितने करोड़ पदमपति बन गये हैं। जब एकदम पूरा नर्क बन जाता तब फिर बाप आकर कॉन्ट्रास्ट बताते हैं। बीच में नहीं आते हैं। तो बच्चों को कितना प्यार से समझाते हैं। (फि)क्र की कोई बात हीं नहीं। तुम सभी को कुछ न कुछ फिक्र होगा। भल छोड़ा है फिर याद तो (र)हता है ना। बाबा को याद क्या है? बच्चों को पढ़ाना; क्योंकि बाप ज्ञान का सागर, प्यार का सागर है।

कहते हैं तुमको प्यार का पुतला बनाकर ही छोडूँगा। भारत को स्वर्ग बनाकर ही छोडूँगा। यह गैरन्टी है। बच्चे भी कहते हैं हम स्वर्ग की स्थापना कर ही छोड़ेंगे। सर्विस पर आराम थोड़े ही करना होता है। आगे चलकर तुम इतना बिज़ी हो जावेंगे जो बात मत पूछो। बहुत दुःखी मनुष्य आवेंगे तुम्हारे पास। अभी तुम्हारी आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा ही समझती है हम इस शरीर द्वारा पढ़ती हैं। विश्व का राज्य लेते हैं। तो ऐसे बाप को कितना याद करते हैं। कितना याद करना चाहिए। बाप तो ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट है। है भी साधारण। कितना बड़ा इम्तहान है विश्व का मालिक बनने का। इनको कहेंगे रूहानी एड्युकेशन। हमारी सारी रूहानी पंचायत है। यह रूहानी प्रिन्सिपल सबसे बड़ा है। तुम रूहानी गवर्मेन्ट के जैसे सभी मिनिस्टर हो। यह भी जानते हो सेकण्ड व सेकण्ड जो कुछ ड्रामा चलता है, जो एक्ट चलती है बिल्कुल एक्युरेट; इसलिए बाबा बेफिक्र बना देते हैं। पुरुषार्थ तो करना ही है। नहीं तो प्रारब्ध कैसे बनेंगे? बाबा ने कहा है आ(ि)त्मक दृष्टि रखो। इससे ही तुम बच सकते हो। हम आत्माओं को पढ़ाता हूं। आत्मा सुनती है। हम भाई–2 हैं। बाप एक है। जो भी 500 करोड़ आत्माएं हैं वह सभी को सद्गति देने आया हूं। ड्रामा अनुसार सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने–2 सेक्शन में चले जाते हैं। तुम्हारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म था जिसको हेविन पैराडाइज़ कहते हैं। वह फिर से स्थापन करने आया हूं। बाप कहते हैं मुझे याद करेंगे नहीं, तो मुफ्त अपने तकदीर को लकीर लगावेंगे। कहां भी जाओ बाप और चक्र को याद करो। बाप को भूले तो कच्चे हो जावेंगे। याद का अभ्यास करते–2 पक्के हो जावेंगे। पवित्र तो बनना ही है। अच्छा, आज भोग है। विश्वकिशोर को आने बाबा ने निमन्त्रण तो दे दिया है। ड्रामा के प्लैन अनुसार सभी को बाप को याद प्यार भी देना। ड्रामा ही ड्रामा करते रहते हैं। कदम–2 पर ड्रामा। ड्रामा के प्लैन अनुसार निमन्त्रण दे रहा हूं। उनको भी जाकर कहेंगे बाबा ने बुलाया है। और क्या कहेंगे? आत्मा को बुलाया जाता है ड्रामा अनुसार। ऐसे नहीं कि शरीर से कैसे निकल कर आवेंगे। यह ड्रामा में नूँध है। इन साक्षात्कार की बातों से ज्ञान और योग की कोई ताल्लुक नहीं। जैसे म(म्)मा आती थी, तुमसे बात–चीत करती थी। यह भी आकर बात–चीत कर सकते हैं। घूम–फिर सकते हैं। अपना अनुभव भी सुना सकते हैं। भोजन भी खा सकते हैं। कोई बात का रेसपॉन्ड आदि ड्रामा में उनको देना होगा तो देगा। सिर्फ़ शरीर ही बदलता है। बाकी तो बात करने से ही समझ जावेंगे। उनकी आत्मा बोलती है। यह भी वण्डरफुल है। बाप का पढ़ाना और बच्चों को पढ़ना और ऊँच (पद) पाना। महत्व इन बातों को नहीं दिया जाता। महत्व दिया जाता है याद को और दैवीगुण को। तब ही देवता बनेंगे। पुराना स्वभाव बदलना होता है। नहीं तो स्वभाव बस अपना पद भी भ्रष्ट कर देंगे। तुम बच्चे जानते हो आत्मा ज्ञान स्वरूप है। आत्मा को बुलाते हैं। आत्मा ही खाती–पीती है शरीर द्वारा। शरीर के कानों द्वारा सुनती है। आत्मा को ही पावन बनना है। घड़ी–2 देहअभिमान में आ जाते है। बाप कहते हैं आत्माभिमानी बनो। इसमें ही मेहनत है। अपन को शरीर समझना तो मूर्खता है। मूर्ख थे। अभी बाप समझदार बनाते हैं। तुम्हारी मुख्य है पढ़ाई। बाकी यह सभी भी ड्रामा में पार्ट है। अच्छा ,मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद–प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। ओमशान्ति। शिवबाबा याद है?